



Published: Feb 12, 2024

ई-नाम: कृषि में एक डिजिटल क्रांति पर अध्ययन

रेणु बाला

शोधार्थी, बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक

lakshitverma0001@gmail.com

प्रो. (डॉ.) सुनीता यादव

बाबा मस्तनाथ विश्विद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक



How to cite:

रेणु बाला सुनीता यादव, 2024 ई-नाम: कृषि में एक डिजिटल क्रांति पर अध्ययन *Universal Research Reports*, 11(1), 117-121.

सार

इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-एनएएम) भारत के कृषि क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी डिजिटल पहल का प्रतिनिधित्व करता है। 2016 में लॉन्च किया गया, इसका उद्देश्य किसानों, व्यापारियों और बाजारों के लिए एक एकीकृत ऑनलाइन मंच प्रदान करके कृषि विपणन को आधुनिक बनाना है। इसके उद्देश्यों, कार्यान्वयन चुनौतियों और परिणामों पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारतीय कृषि परिदृश्य पर ई-एनएएम के प्रभाव की पड़ताल करता है। हम बिचौलियों को खत्म करने, मूल्य पारदर्शिता में सुधार और फसल के बाद के नुकसान को कम करने में मंच की भूमिका की जांच करते हैं। इसके अलावा, हम छोटे और सीमांत किसानों की आय और आजीविका पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करते हैं। ई-एनएएम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और एक निष्पक्ष, अधिक कुशल कृषि विपणन प्रणाली को बढ़ावा देने में किस हद तक सफल रहा है। पारंपरिक क्षेत्रों में क्रांति लाने में डिजिटल प्रौद्योगिकियों की क्षमता के बारे में हमारी समझ में योगदान करते हैं और टिकाऊ कृषि विकास के लिए नीतिगत निहितार्थों में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द: क्रांति, डिजिटल प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक, राष्ट्रीय कृषि।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय कृषि बाजार (ईएनएएम) एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल है जो कृषि वस्तुओं के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने के लिए मौजूदा एपीएमसी मंडियों को नेटवर्क करता है। यह कृषि वस्तुओं के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने के लिए एक आभासी मंच के माध्यम से मौजूदा भौतिक विनियमित थोक बाजार (एपीएमसी बाजार के रूप में जाना जाता है) को नेटवर्क करना चाहता है। यह किसानों को ऑनलाइन प्रतिस्पर्धी और पारदर्शी मूल्य खोज प्रणाली और ऑनलाइन भुगतान सुविधा के माध्यम से अपनी उपज बेचने के लिए बेहतर विपणन अवसरों को बढ़ावा देता है। यह उत्पाद की गुणवत्ता के अनुरूप कीमतों को भी बढ़ावा देता है।

ई-नाम: कृषि में एक डिजिटल क्रांति



इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाज़ार (ई-एनएएम) भारत के कृषि परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर दर्शाता है। यह एक अग्रणी डिजिटल प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य देश में कृषि उपज खरीदने और बेचने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाना है। ई-एनएएम को भारत सरकार द्वारा किसानों के लिए एक एकीकृत और पारदर्शी बाज़ार बनाने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ लॉन्च किया गया था, जो उन्हें अपनी उपज ऑनलाइन बेचने और अपने स्थानीय बाजारों से परे खरीदारों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंचने में सक्षम बनाता है।

ई-एनएएम भारत के कृषि क्षेत्र को आधुनिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है। विपणन और व्यापार प्रक्रियाओं को डिजिटलीकरण करके, यह न केवल किसानों को बाजारों तक बेहतर पहुंच प्रदान करता है बल्कि कृषि आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता और दक्षता को भी बढ़ावा देता है। जैसे-जैसे हम हरियाणा में ई-एनएएम के बारे में किसानों के ज्ञान पर इस अध्ययन में गहराई से उतरते हैं, यह समझना आवश्यक हो जाता है कि ई-एनएएम की इन विशेषताओं और उद्देश्यों को इस क्षेत्र में कृषक समुदाय के बीच कितनी अच्छी तरह से संप्रेषित और अपनाया गया है।

उद्देश्य

ई-एनएएम की कल्पना कृषि वस्तुओं के लिए एकीकृत और पारदर्शी बाज़ार बनाने के प्राथमिक उद्देश्य से की गई थी। यह कृषि विपणन क्षेत्र में कई दीर्घकालिक चुनौतियों का समाधान करना चाहता है, जिसमें निम्नलिखित प्रमुख लक्ष्य शामिल हैं:

- **पारदर्शिता को बढ़ावा देना:** ई-एनएएम का उद्देश्य किसानों, व्यापारियों और अन्य हितधारकों को वास्तविक समय पर मूल्य की जानकारी प्रदान करके कृषि बाजारों में पारदर्शिता लाना है। यह पारदर्शिता किसानों को अपनी उपज कहाँ और कब बेचनी है, इसके बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाती है।
- **बिचौलियों को खत्म करना:** मंच का उद्देश्य कृषि लेनदेन में पारंपरिक बिचौलियों के प्रभाव को कम करना है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि किसानों को उनकी उपज के अंतिम बिक्री मूल्य का अधिक हिस्सा मिले।
- **बाजार पहुंच का विस्तार:** ई-एनएएम एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार के निर्माण की सुविधा प्रदान करता है, जिससे किसानों को विभिन्न राज्यों के खरीदारों को अपना माल बेचने की सुविधा मिलती है, जिससे उनकी बाजार पहुंच का विस्तार होता है।
- **मूल्य में उतार-चढ़ाव को कम करना:** खरीदारों के बीच प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करके, ई-एनएएम मूल्य में उतार-चढ़ाव को कम करना और कृषि वस्तुओं के लिए उचित मूल्य निर्धारण को बढ़ावा देना चाहता है।

प्रमुख विशेषताएँ:

ई-एनएएम में कई प्रमुख विशेषताएं शामिल हैं जो इसे कृषि क्षेत्र में गेम-चेंजर बनाती हैं:



- **एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म:** यह प्लेटफॉर्म देश भर से कई कृषि उपज बाजार समितियों (एपीएमसी) को एक ही डिजिटल बाजार में एकीकृत करता है। यह एकीकरण व्यापार की भौगोलिक बाधाओं को तोड़ता है।
- **वास्तविक समय मूल्य की जानकारी:** ई-एनएएम बाजार कीमतों पर वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करता है, जिससे किसानों को डेटा-संचालित निर्णय लेने में मदद मिलती है।
- **ऑनलाइन बोली:** व्यापारी कृषि उपज के लिए ऑनलाइन बोली में भाग ले सकते हैं, जिससे किसानों के लिए उचित प्रतिस्पर्धा और बेहतर कीमतों को बढ़ावा मिलेगा।
- **गुणवत्ता आश्वासन:** ई-एनएएम कृषि उपज के लिए गुणवत्ता मानकों पर जोर देता है, यह सुनिश्चित करता है कि किसानों को उच्च गुणवत्ता वाली फसलों के लिए उचित मूल्य मिले।
- **इलेक्ट्रॉनिक भुगतान:** प्लेटफॉर्म इलेक्ट्रॉनिक भुगतान प्रणालियों की सुविधा देता है, नकद लेनदेन पर निर्भरता को कम करता है और वित्तीय सुरक्षा बढ़ाता है।
- **ऋण तक पहुंच:** ई-एनएएम किसानों के लिए उनके व्यापारिक इतिहास के आधार पर ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच के अवसर खोलता है।

“कृषि विपणन पर ई-नाम का प्रभाव”

भारत में कृषि विपणन पर ई-एनएएम (इलेक्ट्रॉनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार) का प्रभाव गहरा और परिवर्तनकारी रहा है। ई-एनएएम ने पारंपरिक कृषि विपणन प्रणाली में पारदर्शिता, दक्षता और निष्पक्षता पेश की है। इसके प्राथमिक प्रभावों में से एक बिचौलियों और कमीशन एजेंटों में कमी है, जिससे किसानों को अपनी उपज को सीधे मंच पर सूचीबद्ध करने और खरीदारों से जुड़ने की अनुमति मिलती है, अनावश्यक लागत समाप्त हो जाती है और बेहतर मूल्य प्राप्ति सुनिश्चित होती है। इस बदलाव से मुनाफे का अधिक न्यायसंगत वितरण हुआ है, किसानों को उनकी कृषि उपज के लिए बाजार मूल्य का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त हुआ है।

इसके अलावा, ई-एनएएम ने किसानों को बाजार कीमतों पर वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करके मूल्य पारदर्शिता लाई है। यह पारदर्शिता विक्रेताओं और खरीदारों के बीच सूचना अंतर को कम करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि किसान अपनी उपज कब और कहां बेचनी है, इसके बारे में सूचित निर्णय ले सकते हैं। इससे अधिक प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण भी हुआ है क्योंकि खरीदार अब प्रचलित बाजार दरों से अवगत हैं।

विस्तार और प्रभाव:

अपनी स्थापना के बाद से, ई-एनएएम का दायरा और पहुंच काफी बढ़ गई है। शुरुआत में इसकी शुरुआत 21 पायलट एपीएमसी के साथ हुई और तब से इसका विस्तार पूरे भारत के हजारों बाजारों तक हो गया है।



मंच ने सकारात्मक परिणाम प्रदर्शित किए हैं, जिनमें किसानों के लिए बाजार पहुंच में वृद्धि, लेनदेन लागत में कमी और बेहतर मूल्य प्राप्ति शामिल है।

ई-एनएएम भारत के कृषि विपणन क्षेत्र को आधुनिक बनाने के उद्देश्य से एक परिवर्तनकारी डिजिटल समाधान का प्रतिनिधित्व करता है। यह किसानों को एकीकृत, पारदर्शी और कुशल बाजार तक पहुंच प्रदान करके सशक्त बनाता है, अंततः उनकी आय बढ़ाता है और देश में समग्र कृषि आपूर्ति श्रृंखला में सुधार करता है। यह सिंहावलोकन हरियाणा में किसानों के बीच ई-एनएएम के ज्ञान और उसे अपनाने के बारे में आगे की खोज के लिए मंच तैयार करता है।

निष्कर्ष

इलेक्ट्रॉनिक नेशनल एग्रीकल्चर मार्केट (ई-एनएएम) भारत के कृषि क्षेत्र में डिजिटल प्रौद्योगिकी की परिवर्तनकारी शक्ति के प्रमाण के रूप में खड़ा है। 2016 में अपनी शुरुआत के बाद से, ई-एनएएम ने कृषि विपणन प्रथाओं को आधुनिक बनाने और सुव्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। यह शोध पत्र ई-एनएएम के विभिन्न पहलुओं, इसकी शुरुआत और उद्देश्यों से लेकर किसानों पर इसके प्रभाव और इसके रास्ते में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालता है।

ई-एनएएम की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक छोटे और सीमांत किसानों को सशक्त बनाने में इसकी भूमिका रही है। उन्हें अपनी उपज बेचने के लिए एक पारदर्शी, राष्ट्रव्यापी मंच प्रदान करके, ई-एनएएम ने बिचौलियों पर उनकी निर्भरता को कम करने में मदद की है और परिणामस्वरूप आय और आर्थिक कल्याण में सुधार हुआ है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से भौगोलिक बाधाओं के उन्मूलन ने व्यापक बाजारों तक पहुंच भी खोल दी है, जिससे किसानों को अपनी फसलों के लिए बेहतर कीमतें सुरक्षित करने की अनुमति मिली है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

हीना, एम.एस., प्रवीण यादहल्ली देवराजू डी. लक्ष्मणा, और मनोज कुमार। "फ्रेंच बीन में आनुवंशिक परिवर्तनशीलता, आनुवंशिकता और आनुवंशिक प्रगति (फेजोलस वल्गरिस एल। कर्नाटक के पहाड़ी क्षेत्र के तहत। (जुलाई 2006)।

इफत, बेबी। "कृषि विपणन सुधार: वर्तमान स्थिति और भविष्य की दिशाएं। गट (1): 7-20।

के.एम., महेश, पी.एस.ऐथल और शर्मा के.आर.एस. "सतत विकास प्राप्त करने के लिए 21 वीं सदी के लिए आत्मनिर्भर कृषि और टिकाऊ खेती का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट लेटर्स 7 (2): 175-90।

कौर, बलजीत, के. के. कुंडू और नितिन शर्मा। "ई-एनएएम के प्रसार और नीतिगत उपायों में बाधाएं" (पीडीएफ). एशियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन, इकोनॉमिक्स एंड सोशियोलॉजी (अक्टूबर): 20-27।

कुमार, मुकेश, अतुल ढींगरा, सुमन घलावत और दलीप बिश्नोई। "ई-एनएएम के माध्यम से संचालन में समस्याएं और पेचीदगियां: हरियाणा के किसानों की धारणा। 12(5):1668-72।



Kumar Ujjwal, Dhiraj K- Singh, Bhagwati Prasad Bhatt, and Bikash Sarkar- 2018-
E-Market Led Agricultural Extension & Concept and Practices-July.

पांडेय, घनश्याम, जागृति जायसवाल और सीमा कुमारी। "भारत में कृषि उत्पादन पर संस्थागत ऋण का प्रभाव विश्लेषण" (पीडीएफ). इंडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड डेवलपमेंट 18 (3): 700–706.

पवित्रा, एस., सी. पी. ग्रेसी, राका सक्सेना और गणेश गौड़ा पाटिल। "कृषि विपणन में नवाचार: कर्नाटक, भारत में ई-टेंडरिंग सिस्टम का एक केस स्टडी। कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान समीक्षा 31 (1): 53.

